RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 October 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd October 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सत्रहवां
अंक : छठा
अक्टूबर : 2019

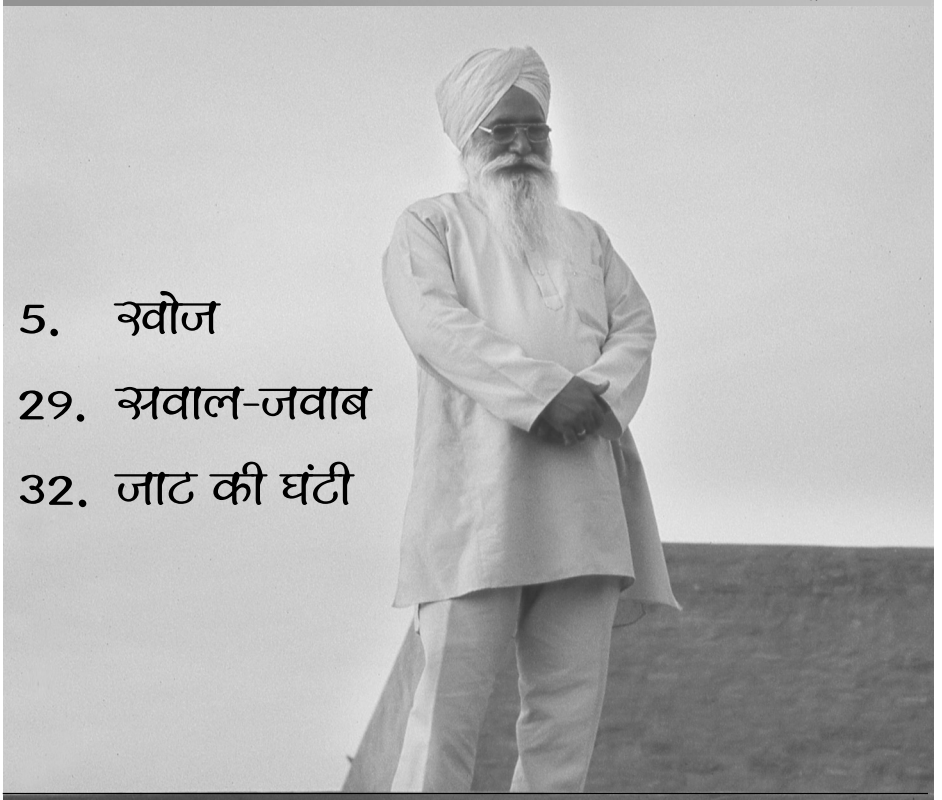

5. खोज
29. सवाल-जवाब
32. जाट की घंटी

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **सुखपाल कौर मेहता**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 211 - मूल्य - पाँच रुपये

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

मिल जाऐ मन मोहणा

मिल जाऐ मन मोहणा, मेरा सतगुरु सोहणा,
सईयो कैहणा ओस नूं, कैहणा ओस नूं, (2)
हुण दे दवे दर्श, कर लवे जे तरस,
सईयो कैहणा ओस नूं.....

1. *ओहदे विछोड़े ने पाया, साडे सीने विच सल,*
मुड़ घर आ जावे सोहणा, आ के ला लवे गल, (2)
असीं जीव हां विचारे, पऐ कर्मां दे मारे, (2)
सईयो कैहणा ओस नूं.....

2. *असीं मन दे हां दाता, साथों भुल्लां लख होईयां,*
जे ओह बक्श लवे सोहणा, असीं परदेसणां नी होईयां, (2)
हुण देर होई काफी, सानूं दे देवे माफी, (2)
सईयो कैहणा ओस नूं.....

3. *हुण दे दवे दर्श, कर लवे जे तरस,*
इक पल वी ऐ औक्खा, हुण बीत गए बरस, (2)
जे ओ मार लवे गेड़ा, मुक जाऐ ऐह झेड़ा, (2)
सईयो कैहणा ओस नूं.....

4. *सुणे गुरु कृपाल, आ के कर दे निहाल,*
छेती आ जावे प्यारा, लवे जीवां नूं संभाल, (2)
'अजायब' करे अरजोई, तेरे बिना दाता मोई, (2)
सईयो कैहणा ओस नूं.....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

खोज

स्वामी जी महाराज की बानी DVD-367 16 पी.एस आश्रम, राजस्थान

आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनने वाला है। आप हमें प्यार से बताते हैं कि दुनिया में कौन सी चीज दुर्लभ है, कौन सी चीज हमारी **खोज** के काबिल है? खासकर आज के युग में दुनिया ने बड़ी खोज की संसार के चक्कर लगाकर चन्द्रमा तक पहुँच गए। विज्ञान में बड़ी तरक्की की है ऐसे-ऐसे एटम तैयार किए हैं और वे दिल में मान करते हैं कि हम सारी दुनिया को एक पलीते में खत्म कर सकते हैं। किस तरह दूरी को कम कर दिया है, आज का इंसान हवा में उड़ रहा है।

परमात्मा कृपाल की दया से मुझे संसार में जाने का और हर छोटे-बड़े से मिलने का मौका मिला है लेकिन आज का इंसान सहमा हुआ है कोई खुश नजर नहीं आता क्योंकि हमारी **खोज** अधूरी है। दूसरी वर्ल्ड वार के समय मैं आर्मी में था। मैंने बहुत कुछ आंखों से देखा है। मेरे छोटे-बड़े साथी साथ छोड़कर चले गए। मुल्कों के मुल्क पराए हो गए।

प्यारयो! जब अन्त समय आता है तब न हमारे साथ भाई-बहन जाते हैं और न माता-पिता ही जाते हैं। हम संसार में आकर यही **खोज** करते हैं कि पत्नी मिल जाए शायद शांति आ जाएगी। लड़कियों के दिल में यही चाह होती है कि शादी हो जाए शायद शांति आ जाएगी, फिर धन-दौलत की तरफ निगाह मारते हैं कि शायद इसे प्राप्त करने से शांति आ जाएगी। हम बड़ी-बड़ी कुर्बानियां करते हैं, धन की खोज में हिन्दुस्तान को छोड़कर पराए मुल्कों में

जाते हैं। पश्चिम के लोग धन की **खोज** में हिन्दुस्तान में मारे-मारे फिरते हैं। इसी तरह मान-बड़ाई की खातिर हम ऊँच-नीच, जायज-नाजायज प्राप्त करने की खातिर सब कुछ ही करते हैं। सन्तों का जातिय तजुर्बा है कि इन चीजों ने हमारे साथ नहीं जाना। जिस चीज ने हमारे साथ जाना ही नहीं उसकी **खोज** करने से हमें क्या फायदा हो सकता है, क्या हम शांति प्राप्त कर सकते हैं? यहाँ की खोज यहीं रह जाती है।

आप सबसे पहले ठंडे दिल से यह सोचें! हमारे साथ जाने वाली कौन सी वस्तु है? हम उस चीज की **खोज** करें जो हमारे साथ जाएगी। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन नामे को संग ना साथी, मुक्ते नाम ध्यामणया ।

यह शरीर जिसमें आप बैठे हैं यह भी पराया किराए का मकान है यहीं पर छोड़कर चले जाना है। नाम के बिना कुछ भी हमारे साथ नहीं जाएगा। हम धन-दौलत इक्कट्ठी करके बैंको में रखते हैं यह यहीं रह जानी है अगर कोई कारखाना बना लेते हैं या कोई अच्छा भवन निर्माण कर लेते हैं वह भी यहीं रह जाना है।

आप देख लें! हमारे बड़े बुजुर्ग जिन चीजों के साथ प्यार करते थे और हमारे माता-पिता, दादा-परदादा जिन्होंने हाट-हवेली के साथ बहुत प्यार किया, बड़े कीमती उसूल कुर्बान करके सब कुछ प्राप्त किया लेकिन जब मौत आई वे उस समय खाली हाथ चले गए। वे ये सामान साथ लेकर नहीं गए तो हम कौन सी आशा लगाकर बैठे हैं कि हम इस सामान को साथ ले जाएगें?

हमें उस चीज की **खोज** करनी चाहिए जो हमारे साथ जाए, वह नाम है। अब सवाल पैदा होता है क्या हम नाम अपने आप प्राप्त

कर लेंगे, क्या नाम पोथियों में से प्राप्त हो सकता है या बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़कर प्राप्त हो सकता है? गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

स्मृत वेद पुराण पुकारन पोथियां।
नाम बिना सब कूड़ गाली होछियां।।

आप पोथियां, स्मृतियां, वेद कुछ भी पढ़ लें ये सब नाम की महिमा गाते हैं। वेद शास्त्र , स्मृतियाँ सब यही कहती हैं कि नाम के बिना पढ़ना-पढ़ाना सब थोथा है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

नाम निधान अपार भक्ता मन वसे।
दुख अंधेरा तैं संता संग नसे।।

नाम ने हमेशा किसी मनुष्य के जामे में आकर निवास किया होता है। वह कभी नानक बनकर आया कभी कबीर बनकर आया, कभी स्वामी जी तो कभी सावन-कृपाल के रुप में आया। हम उस नाम की महिमा ब्यान नहीं कर सकते। महात्मा के पास जाने से ही हमारा फायदा होगा।

आप देखें! जब बच्चा पैदा होता है उस बेचारे की क्या हालत होती है? वह गंद में पैदा होता है उसका वास कितनी गंदी और तंग जगह पर होता है। टांगें ऊपर होती हैं, सिर नीचे होता है। उस समय वह साँस-साँस के साथ परमात्मा के आगे फरियाद करता है कि हे प्रभु! मुझे इस कैद से निकाल, मैं तेरा भजन करुँगा। वह पिछले समय को याद करके रोता है कि पता नहीं परमात्मा ने कितनी बार इंसानी जामे का तोहफा दिया लेकिन मैंने उसे गंवा दिया। यह वहाँ पर यह भी इकरार करता है कि मैं अब जाकर नाम रूपी गुरु की **खोज** करुँगा और सच्चे दिल से तेरा दसवंद दूँगा।

बहुत से प्रेमी धन-दौलत या फसल का दसवंद निकाल देते हैं। मैं अपनी जिंदगी में फसल का दसवंद निकालता रहा हूँ, आज भी

पूरी कोशिश है। दसवंद निकालना बड़ा आसान है लेकिन समय का दसवंद चौबिस घंटे में से ढाई घंटे बनता है। हम माँ के पेट में इकरार करके आए हैं फिर जब यहाँ नाम लेते हैं गुरु से इकरार करते हैं कि हम ढाई घंटे जरुर भजन करेंगे लेकिन सब भूल जाते हैं।

गुरु साहब कहते हैं कि जब बच्चा जन्म लेता है माता के पेट में उसने जो दुख-तकलीफ उठाया होता है परमात्मा के आगे प्रार्थनाएं की होती हैं, बाहर आते ही सब भूल जाता है। बच्चा जब आँखें खोलता है तो घरवाले खुशी मनाते हैं कि हमारे घर में बच्चा पैदा हुआ है। वह देखता है कि शायद ये नजारे हमेशा ही रहेंगे। बहन-भाई मुझे लोरियां देंगे, ऐसे ही मेरे मुँह में खाना डालेंगे। अंदर से ख्याल टूटता है बाहर दुनिया के नजारों में जुड़ जाता है सब कुछ भूल जाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

मुख तले पैर उपरे वसंदे कुहथड़े थाऊं।
नानक सो धनी क्यों विसारेया ते उदरे जिसदा नाऊं।।

आप कहते हैं कि माँ के पेट में तेरी रक्षा किसने की? मानना पड़ेगा कि कोई शक्ति है। सन्त उसे शब्द भी कहते हैं और हम उसे परमात्मा, वाहेगुरु, अकाल पुरख कई नामों से याद करते हैं।

बूढ़े हो जाते हैं, लकवा मार जाता हैं, चारपाई से हिल नहीं सकते। अब यह घरवालों पर निर्भर हैं कि वे मुँह में पानी डालें या न डालें। हमने जिन बच्चों की खातिर जिंदगी में कीमती उसूल कुर्बान किए होते हैं अब यह उन पर निर्भर है कि वे हमारे साथ कैसा व्यवहार करते हैं? अगर उनमें परमात्मा बसेगा तो ही वे हमारे ऊपर रहम करेंगे। जब अंदर प्रकाश से ख्याल टूटकर बाहर जुड़ता है तो अज्ञानता का अंधेरा आँखों के आगे आ जाता है मालिक की **खोज** नहीं करते, दुनिया के पदार्थों की खोज करते हैं।

जब हम सन्तों के सतसंग में जाते हैं तो वे हमें प्यार से समझाते हैं, ''प्यारेयो! आप सबसे पहले यह सोचें! हम सतसंग में क्यों आए हैं, परमात्मा ने हमें इंसान का जामा किसलिए दिया है, यह जामा कितना अमोलक है? अगर हम किसी से शरीर का कोई अंग माँगे,चाहे हम उसे कितना भी मूल्य दें तो भी कोई अपना अंग नहीं देता। कौन अपनी आँखें, नाक या कान किसी को देता है?''

परमात्मा ने हमें सब कुछ मुफ्त में ही दिया है क्या यह रहमत नहीं? फिर परमात्मा रासधारियों की तरह इंसान की शक्ल धारकर संसार में आता है। हमने परमात्मा की **खोज** नहीं की होती इसलिए हम आए हुए महात्मा को कष्ट देते हैं, उनसे फायदा उठाने की बजाय उन्हें गालियाँ देते हैं।

गुरु नानकदेव जी को कुराहिया कहा गया। आप गुरु गोबिंद सिंह जी का इतिहास पढ़ते हैं कि आपने तीन महीने कमर कसा नहीं खोला, स्नान नहीं किया जंगलों में घूमते रहे। हम एक दिन न नहाएं तो हमारी क्या हालत हो जाती है। किसी महात्मा को आरे से चीर दिया गया। उन महात्माओं का क्या कसूर था? वे तो हमारे ऊपर रहम करने के लिए आते हैं लेकिन हम उन्हें कष्ट देते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सन्तों की संगत में आकर जन्म-मरण का दुख और अज्ञानता का अंधेरा खत्म हो जाता है, हमारा रास्ता खुल जाता है। जब हम सिमरन के जरिए नौ द्वारों से ऊपर चढ़ जाते हैं तब अंदर किताब की तरह साफ है बाहर से ज्यादा अंदर साफ है इसमें कोई शक नहीं।''

हम अंदर क्यों नहीं जाते? यह भी एक सवाल है क्योंकि हम देखा-देखी नाम तो ले लेते हैं लेकिन सन्तों के पास इसलिए नहीं जाते कि हमारा दुख-अंधेरा दूर हो या हमारा जन्म-मरण कट

जाए। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सब एक जैसे नहीं होते। जंगल में शेर भी होते हैं सारे गीदड़ नहीं होते, खोजी भी होते हैं।'' कबीर साहब कहते हैः

दुनिया ऐसी दीवानी भाई, भक्ति भाव न बूझे जी।।

हमारे ऊपर दुनिया के रंग चढ़े हुए हैं हम दुनिया के पदार्थों में मस्त हैं। कोई ऊँचे भाग्य वाला ही सन्तों से भक्ति का दान मांगता है। सन्त सारा दिन ही भक्ति का दान देते रहते हैं और वे सोए हुए भी हमें भक्ति के लिए प्रेरित करते रहते हैं। सतसंग हमें भक्ति की तरफ ही प्रेरित करता है लेकिन हम क्या करते हैं?

कोई आए तो बेटा माँगे यही गौसाई दीजे जी।

आप देखें! कोई कहता है मेरा बेटा राजी हो जाए। कोई कहता है मेरी बिमारी दूर हो जाए कोई कहता है बेरोजगारी दूर हो जाए। हम मांगते-मांगते नहीं थकते क्या ऐसे लोग भक्त हो सकते हैं? इनसे बढ़कर भिखारी और कौन हो सकता है? महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऐसे लोगों को सन्तों के पास नहीं आना चाहिए, वे अपने घर में ही तशरीफ रखें। सन्तों की दुकान पर तो नाम है, नाम जन्म-मरण को काटने वाली दवाई है।''

बिन तुध होर जे मंगना सिर दुखां दे दुख।
दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख।।

हमारा जातिय तजुर्बा है कि हम जो चीज मांगते हैं परमात्मा हमें वह चीज दे देता है फिर हम कौन सा शान्त हो जाते हैं? उसमें से और ख्वाहिश पैदा हो जाती हैं जिससे दुख पैदा हो जाता है। लड़का मांगते हैं परमात्मा की दया से लड़का मिल जाता है अगर वह बिमार हो जाए तो फिर विनती करते हैं कि देखना कहीं यह भगवान को प्यारा न हो जाए।

अगर हमारा कोई काम पूरा न हो तो हम गुरु को भी छोड़ जाते हैं। क्या हम भक्ति के लिए आए हैं, क्या दुख-अंधेरा दूर करने के लिए आए हैं? हम भजन में तो दो मिनट ही बैठते हैं लेकिन अरदास करने में घंटा लगा देते हैं। सन्त हमें जिन चीजों से निकालने के लिए आते हैं हम बार-बार उन्हीं में फँसते हैं।

महाराज सावन सिंह जी मिसाल दिया करते थे कि एक कैदी कैद काटकर जेलर से कहता है कि मेरा चूल्हा-चौंका या कम्बल वगैरह संभालकर रखना क्योंकि मैं फिर जल्दी वापिस आऊंगा। हमारी यही हालत है हम चौरासी लाख योनियों के जेलखाने में फँसे हुए हैं। हम भी धर्मराज से यही कहते हैं कि हम फिर वापिस आएंगे हमारी योनि तैयार रखना। सन्तों के पास जाने का तो यही मतलब है कि जन्म- मरण के दुख को दूर करें।

मोह बाद अहंकार सिर पर रूनेया।
सुख न पाया मूल नाम विछुनेया।।

मोह और अहंकार के जाल में फँसे हुए लोग आखिर रोते ही गए हैं। चाहे कोई कितना ही बड़ा क्यों न हो वह नाम के बिना इस संसार से रोता ही गया है। जब से यह आत्मा नाम से बिछुड़ी है आज तक इसे कहीं भी सुख नहीं मिला, जहाँ भी जन्म लिया मुसीबतें ही मुसीबतें हैं। सांप पेट के बल रेंगता है बेचारा फिर भी डरता है अगर किसी को दिखाई दे जाए चाहे किसी को कुछ न कहे उसे डंडे से मारते हैं। क्या चिड़िया या बाज आजाद उड़ रहे हैं? भेड़िए, बकरियों को खा जाते हैं, क्या वे आजाद हैं? भेड़िए शेरों से डरते हैं, क्या ये इन योनियों में सुखी हैं?

क्या हम इंसान के जामे में आकर सुखी हैं? आप इंसानी जामें में देखें! सुख कहाँ है? गुरु साहब कहते हैंः

न सुख विच गृहस्थ दे, न सुख छड्ड गया।
न सुख बैठे रहन विच, न सुख पंद पया।
सुख है विच विचार दे या सन्तां शरण पया।।

कहीं दिल में ख्याल हो कि गृहस्थ करने से सुखी हो जाएंगें या त्यागी बनकर सुखी हो जाएंगे? हमारे दिल में विचार आता है कि किस चीज की **खोज** करें, क्या धर्मग्रन्थ पढ़ें? अगर आप परमात्मा के दरबार में सच्ची शान्ति, सच्ची इज्जत चाहते हैं तो आप किसी पूर्ण महात्मा के चरणों में जाएं। आपके साथ जाने वाला कीमती दुर्लभ हीरा नाम है। नाम महात्मा देते हैं, नाम को आग जला नहीं सकती, चोर चुरा नहीं सकता। अब सवाल पैदा होता है कि कितने आदमी हैं जो इस नाम की कद्र करते हैं। कोई विरला ही नाम की कद्र जानता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कोटन में कोई जो भजन राम को पावे।
जग में उत्तम कडिए विरले केई के।।

आप कहते हैं कि कुम्हार को हीरा मिल जाए तो वह हीरे को गधे के गले में डाल देता है जब वही हीरा जौहरी को मिल जाता है तो वह उसे अपने सिर पर रख लेता है।

जब गुरु नानकदेव जी सियालकोट की तरफ गए तो मर्दाना ने आपसे कहा, ''महाराज जी! आप नाम की इतनी महिमा करते हैं कि यह लालों से भी ऊपर है। लाल की तो कीमत है लेकिन नाम की कोई कीमत नहीं फिर भी लोग नाम की कद्र क्यों नहीं करते?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''पारखी कोई-कोई होता है।''

मर्दाना को भूख लगी तब उसने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''महाराज जी! आप तो जंगलों में घूम रहे हैं लेकिन मुझे भूख ने परेशान किया हुआ है।'' गुरु साहब ने मर्दाना को एक लाल दे

दिया। मर्दाना ने कहा, ''पत्थर का कोई क्या देगा?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''मर्दाना! तू यह लाल लेकर तो जा।'' मर्दाना वह लाल लेकर बहुत से लोगों से मिला लेकिन सबने यही कहा कि हमने इस पत्थर का क्या करना है? अगर तुझे खाना खाना है तो हम मुफ्त में खिला देते हैं। पूर्ण सन्तों के सतसंगी जानते हैं अगर हम मुफ्त में खाएंगे तो पता नहीं इसके कर्म कैसे हैं? क्योंकि मुफ्त कोई नहीं खिलाता कोई न कोई आशा रखी होती है।

आप देख लें! बच्चा बीमार है तो बीबियां भाई को रोटी बच्चे के सिर के ऊपर से वार कर देती हैं, बच्चे का मुँह दिखाकर उसका हाथ लगवाकर देती हैं। जो खाएगा क्या उसे कर्म नहीं उठाने पड़ेंगे?

फिर मर्दाना ने गुरु नानकदेव जी के पास आकर कहा अगर आप मुझे कोई अच्छी चीज देते या पैसे देते तो कोई रोटी खिलाता आपने तो मुझे पत्थर दे दिया है। तब गुरु नानकदेव जी ने कहा यहाँ एक सालस जौहरी है तू उसके पास जा। जब मर्दाना उसके पास गया तो जौहरी मर्दाना की तरफ देखकर सोचने लगा कि यह एक मामूली सा आदमी है लेकिन इतना कीमती हीरा लेकर घूम रहा है।

जौहरी ने कहा कि मैं इसकी कीमत तो नहीं दे सकता तू इसका नजराना सौ रुपये ले जा। मर्दाना ने कहा आप इस हीरे को रख लें मैं मुफ्त पैसे नहीं लूंगा, मेरा गुरु पूरा है। जौहरी पर इस बात का असर हुआ कि इसे जरुर कोई पूरा गुरु मिला है जो यह मेरी मुफ्त की रोटी नहीं खा रहा और ना पैसे ले रहा है।

जौहरी मर्दाना के साथ आया कि मैं भी ऐसे गुरु के दर्शन करुँ। आते ही उसकी आँखें चार हुई तो उसने गुरु नानकदेव जी को पहचान लिया। गुरु नानकदेव जी ने सालस जौहरी को अपना

प्रतिनिधि बनाया और कहा, ''तू जिसे नाम देगा मैं उसकी संभाल करूंगा।'' आजकल हम प्रतिनिधि कहते हैं उस समय कहते थे कि इसे मंजी बक्शी है। बड़े विरले ही नाम की कद्र करते हैं।

स्वामी जी महाराज का शब्द है। आप प्यार से कहते हैं कि हे आत्मा! तू इस संसार में सतगुरु को **खोज** क्योंकि नाम सतगुरु से मिलता है, नाम में ही मुक्ति है। सतगुरु के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं। अगर संसार में कोई दुर्लभ रत्न है तो वह गुरु और उसका नाम है।

सतगुरु खोजो री प्यारी, जगत में दुर्लभ रतन यही।
जिन पर मेहर दया सतगुरु की उनको दर्श दई।।

आप प्यार से कहते हैं, ''यही दुर्लभ हीरा है जिस पर परमात्मा मेहर करता है उसे गुरु जरुर मिलता है।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हमारी **खोज** सच्ची है चाहे पूर्ण गुरु न मिले फिर भी इंसानी जामे से नीचे नहीं जाते। परमात्मा अंदर बैठा जानता है कि यह **खोज** रहा था मैं इसे नहीं मिला। जिसके अंदर सच्ची तड़प है उसके लिए महात्मा को दूर-नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। जिसे नाम मिलना है महात्मा उस आत्मा को अपने पास बुलाने का कोई जरिया बनाएगा या खुद उसके पास जाएगा।

जिस तरह हमारी मौत-पैदाइश मुकर्र है उसी तरह नाम के मिलने का समय भी पक्का है कि नाम कब मिलना है, किस जामें में मिलना है? जब परमात्मा हमें बख्शता है तभी वह आकर मिलता है। गुरु रामदास जी महाराज कहते हैंः

जिन मस्तक धुरो हर लिखया, तिन सतगुरु मिलया।
अज्ञान अंधेरा कटया, गुरु ज्ञान घट बलया।।

सन्त जब हमें नाम दे देते हैं तो अंदर से अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है। सन्त हमारे कर्मों के मुताबिक हमारे अंदर कुछ नाम का प्रकाश जरुर करते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियां-बीवी के भी एक जैसे कर्म नहीं होते उन्हें भी एक जैसा अनुभव नहीं होता, फिर उसे आगे बढ़ाना सेवक का काम है।''

हर लद्दा रत्न पदार्थों फिर बोहड़ न चलया।
नानक नाम अराध्या, अराध हर मिलया।।

सन्त जो नाम देते हैं अगर सेवक कहे कि मैं उसे गँवा दूँगा ऐसा नहीं हो सकता। नाम को आग जला नहीं सकती, चोर चुरा नहीं सकता और ठग ठग्गी नहीं मार सकता। सेवक की क्या ताकत है कि उस नाम को छोड़ दे। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''इस जन्म में नहीं जपेगा तो जहाँ से छोड़ा है फिर वहीं से शुरु करना पड़ेगा जपना तो हमने ही है। टीचर की अपनी ड्यूटी होती है और स्टूडेंट की अपनी ड्यूटी होती है। हमें उस नाम की सच्चे दिल से अराधना करनी चाहिए।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब इंसान, इंसान की मजदूरी नहीं रखता तो क्या भगवान ही बे-इंसाफ हैं? क्या वह हमारी मजदूरी रखेगा?'' सूफी सन्त बुल्लेशाह ने कहा है:

वेहड़े सजण दे आए के सानूं कीता सुधूम ।
ओह प्रभ साडा सखी है असी सेवा कनियों सूम।।

हम भजन करने में कंजूस होकर बैठे हैं, वह देने वाला तो सखी है। महाराज कृपाल पच्चीस साल और महाराज सावन सिंह जी पैंतालीस साल यही कहते रहे कि देने वाले का क्या कसूर है, मसला तो लेने वाले का है। हम सन्तों के इशारों को समझने की बजाय दुनिया के पदार्थों में उलझ जाते हैं।

बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुख।

सन्तोष तो नाम में है। वह वस्तु मांगे जिससे आपको शान्ति आए सन्तोष आ जाए। मैं अपना जातिय वाक्या बताया करता हूँ कि मेरी एक चाची थी उसके लड़के में कुछ नुख्स था कोई उसे अपनी लड़की नहीं देता था। आमतौर पर लोहड़ी के त्यौहार पर गाँव के लोग इकट्ठे होकर जिसके घर में लड़का पैदा हुआ हो या नई बहु आई हो तो वे लोग तिल और गुड़ बाँटते हैं। मेरी चाची ने भी मन्नत मांगी कि अगले साल मेरे बेटे की शादी हो जाए तो मैं भी यहाँ तिल और गुड़ लेकर आऊँगी।

मालिक ने कृपा की घर में अच्छी जायदाद थी क्योंकि रिश्ते तो पहले से ही आ रहे थे अगर वह मन्नत न मांगती तो भी शादी हो जानी थी लेकिन हमारे यहाँ बीबियां बेमतलब ही मन्नत माँग लेती हैं। शादी हो गई बहु घर में आई। भाई सुंदरदास कहता थाः

जद घर विच आई नूंह ते बुढ़ी दा कंद कन्नी मुँह।
ते मार के मुँह ते थप्पड़ कैहंदी है वे मुहाँ फेर भालेंगा नूहां।।

जब तक घर में बहु नहीं आती तो बूढ़ी मन्नतें मांगती है। चाची की बहु और बेटे से अनबन हो गई। अब लड़का फँस जाता है अगर वह घरवाली के कहने पर न चले तो घरवाली क्या करे? हम कह तो देते हैं कि यह उसका हो गया है। प्यारेयो! लड़के का भी फर्ज बनता है क्योंकि लड़की अपने माँ-बाप को छोड़कर उसके साथ आई है। चाची ने फिर मन्नत मांगी अगर ये दोनों मर जाएं मैं फिर ही गुड़ और तिल दूंगी।

मैं आर्मी से आया, मैंने सोचा आज तो चाची कुछ न कुछ खिलाए-पिलाएगी। मुझे बाहर ही वह लड़का मिला उसने मुझसे कहा, ''चाची तेरे लिए गुड़-तिल तैयार रखकर बैठी है।'' मुझे कुछ

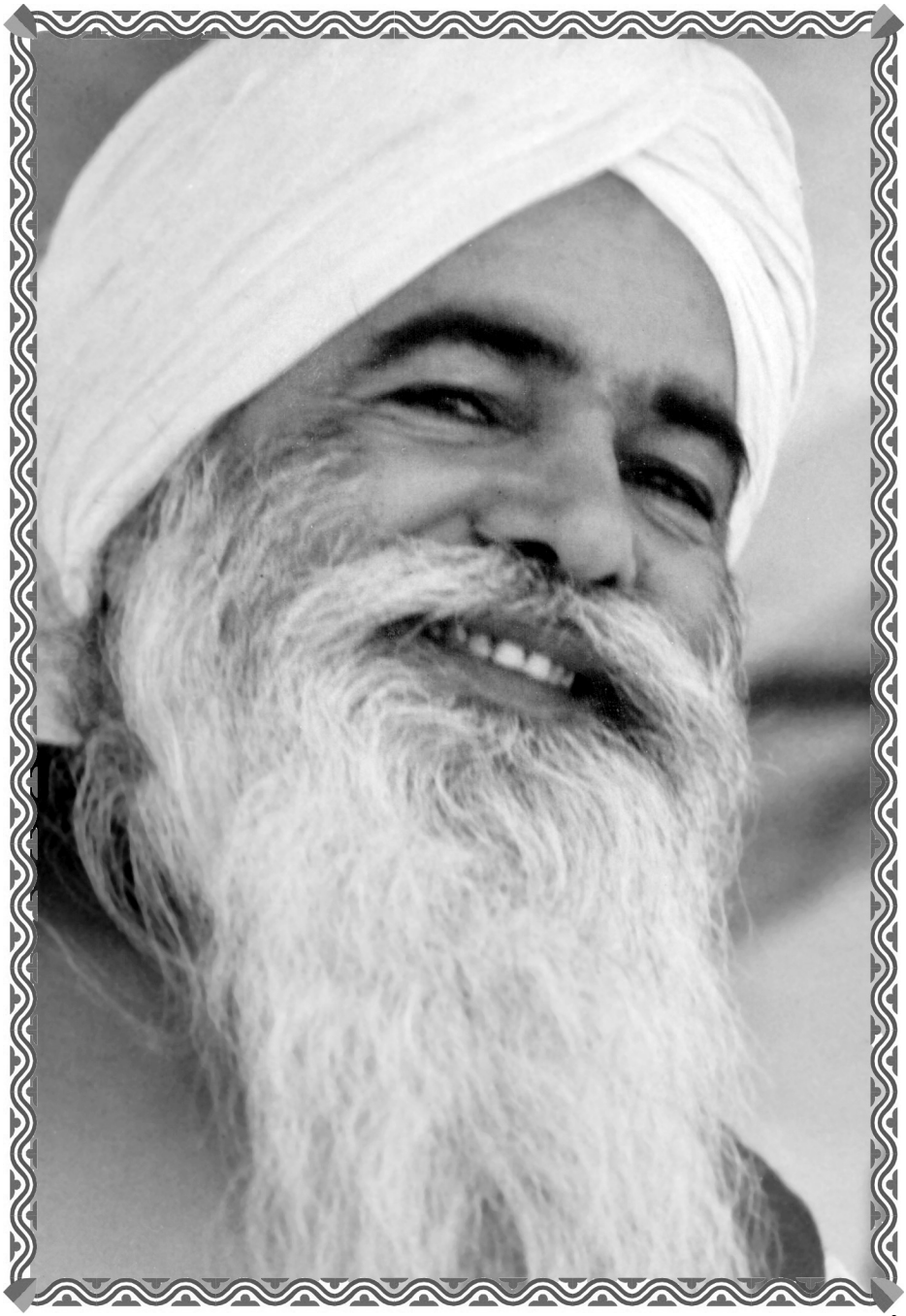

पता नहीं था क्योंकि मैं तो साल भर बाद घर आया था। जब मैं चाची के पास गया तो उसने दोनों को बहुत गालियां निकालकर कहा कि जब ये दोनों मर जाऐंगे तो ही मैं गुड़-तिल दूँगी।

आप सोचकर देखें! अगर परमात्मा हमारी मांगों को पूरा भी कर दे तो हम फिर उससे और माँगते हैं । हमने तो परमात्मा को खिलौना समझ रखा है। सन्तों की हर बात में तजुर्बा होता है वे अपनी जिंदगी को हर एक के आगे किताब की तरह खोलकर रख देते हैं कि ये लोग शिक्षा लें। इसलिए हमें वह चीज मांगनी चाहिए जिससे शान्ति आए वह है सतगुरु का नाम और सतगुरु का प्यार।

परमात्मा ने जिसके मस्तक में लिख दिया है चाहे वह शिष्य गुरु को न जानता हो लेकिन सच तो यह है कि गुरु ही शिष्य को ढूँढ़ता है। गुरु ही शिष्य के अंदर प्यार का बीज लगाता है और गुरु खुद ही आकर उससे मिलता है।

दर्श पाय सतलोक सिधारी। सत्तनाम पद कीन सही।

जब हम सन्तों के पास जाते हैं हमें उनके दर्शनों का यह फल मिलता है कि वे हमारी आत्मा की डोर सतलोक में बांध देते हैं। काल ने जो डोरियां छुपाकर रखी हैं गुरु काल से उन डोरियों को ले लेता है। जो सेवक रोज-रोज साधना करता है वह सतलोक की साधना है, सतलोक ही उसका इष्ट है।

सही नाम पाया सतगुरु से, बिन सतगुरु सब जीव बही।।

सतगुरु के मिलने से यह फायदा हुआ कि सही नाम मिला। असल और नकल आज से ही नहीं जब से दुनिया बनी है तब से चली आ रही है। अगर हम सारा दिन मिश्री-मिश्री करते रहेंगे तो क्या मुँह मीठा हो जाएगा? एक बार मिश्री खाने से मिश्री का स्वाद आएगा, मुँह मीठा हो जाएगा।

अगर हम सारा दिन पोंड-पोंड करते रहें तो क्या हम साहूकार बन जाएंगें? अगर किसी मजिस्ट्रेट को अपना ओहदा छोड़े हुए पचास या सौ साल हो गए हों या वह इस संसार में भी न हो और हम उसकी पिक्चर के आगे धूप जलाएं तो क्या वह हमारा फैसला कर देगी? वह अपने ओहदे पर रहते हुए ही फैसला कर सकता था। इसी तरह अगर कोई दुकानदार अपनी पिक्चर दुकान पर रखकर कहीं चला जाए तो क्या वह पिक्चर सौदा बेच लेगी? इसी तरह हम जो राम, रहीम, वाहेगुरु, अकाल पुरख कहते हैं ये केवल अक्षर हैं। ये सब बोलने से राम, अल्लाह, वाहेगुरु नहीं मिलता।

आप गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की बानी पढ़कर देखें! तोता भी इंसान की संगत में आकर राम-राम कहना सीख लेता है लेकिन जब वह पिंजरा तोड़कर उड़ जाता है दूसरे तोतो की संगत में जाकर राम-राम करना भूल जाता है; हमारी भी यही हालत है।

मैं अपने पिता की कहानी सुनाया करता हूँ कि मेरे पिताजी सुबह उठकर जपुजी साहिब पढ़ते और नौकरों को गालियां भी निकालते। मैं हंसता था कि परमात्मा आपका जपुजी साहिब मंजूर करेगा या गालियां मंजूर करेगा? इसी तरह हम वाहेगुरु-वाहेगुरु करते रहते हैं और लोगों से बातें भी करते रहते हैं।

जब परमात्मा कृपाल संसार छोड़कर शब्द में मिल गए उस समय मेरा दिल-दिमाग मेरे बस में नहीं रहा। मैं उस वक्त कुछ समय संगरिया कुछ समय सुंदरपुरा और टिब्बी के कई रेस्ट हाऊसों में रहा। जिस समय मैं संगरिया में रह रहा था, वहाँ ऐसा रास्ता था कि मुझे शहर में से होकर गुजरना पड़ता था। वहाँ एक पंडित घरवालों के कहने पर माला फेर रहा था। उस पंडित ने थाली में चने के दाने रखे हुए थे जब एक माला पूरी हो जाती तो वह एक

चना उठाकर दूसरी तरफ रख देता। अफसोस से कहना पड़ता है कि पंडित बैठा-बैठा दूसरों से शराब की बातें भी करता रहता कि आज शाम को आप शराब लेकर आएं मैं उस समय आपके पास पहुँच जाऊँगा। आप सोचें! अगर वह अंदर जुड़ा होता या उसे कोई पूर्ण गुरु मिला होता तो क्या वह ऐसा करता? ऐसा करना अपने साथ धोखा है और दूसरों के साथ भी धोखा है। अर्जुनदेव जी कहते हैं:

राम राम सबको कहे, कहेयां राम न होए।
गुरु प्रसादि राम मन बसे, ता फल पावे कोए।।

मिश्री-मिश्री कहने से मुँह मीठा नहीं होता। हमें कोई पूर्ण महात्मा मिले वह हमारे ऊपर कृपा करके हमारे मन में नाम टिकाए हम उस नाम की साधना करें तभी हमारी आत्मा जहाँ से आई है अपने घर पहुँच सकती है, नाम पोथियों में से नहीं मिलता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर नाम लफ्ज़ होता तो पाँच साल की लड़की भी दे सकती थी।'' गुरु अमरदेव जी ने बुढ़ापे की आयु में बहत्तर साल से बयासी साल तक गुरु के दर पर पानी ढोया, बहुत मशक्कत की। अगर नाम लफ्ज़ होता तो शाह बल्ख बुखारा हिन्दुस्तान में आकर बारह साल कबीर साहब का ताना न बुनता। इसी तरह गोपीचंद, भृतहरि राजा थे, अच्छे पढ़े-लिखे भी थे वे भी गोरख के दरवाजे पर भीख माँगने न जाते। उन्होंने भी गोरख के दर पर जाकर शीश झुकाया।

सही नाम की धुन सच्चखंड से उठती है उसे कीर्तन, धुन, शब्द-नाम कुछ भी कह लें वह खण्डों-ब्रह्मांडो को ताकत देती हुई हमारे माथे के पीछे धुनकारे देती है। सतगुरु हमें उस ताकत के साथ जोड़ते हैं जो कण-कण में व्यापक है। इसी नाम ने दुनिया की रचना पैदा की है। स्वामी जी महाराज कहते है:

धन धन धन प्यारे, क्या उपमा कहूँ मैं शब्द की।
जो परचे है शब्द में, सो जाने उपमा शब्द की।।

जो शब्द की कमाई करके शब्द रुप हो गए हैं वे ही शब्द-नाम की, हरि कीर्तन की महिमा जानते हैं। हम अंदर के कीर्तन को छोड़कर बाहर का कीर्तन पसंद करते हैं क्योंकि अंदर मेहनत करनी पड़ती है। बाहर का कीर्तन तो हम घंटा या दो घंटे करेंगे, उसे बजाने वाले थक जाएंगे, बाजा खराब हो जाएगा या सुर ताल नहीं आएंगे लेकिन जो कीर्तन सन्तों से मिलता है वह जन्म से लेकर मरण तक बंद नहीं होता।

हर कीर्तन है साध संगत सिर कर्मन के कर्मा।
कहो नानक तिस भयो प्राप्त जिस पुरव लिखे का लहना।।

जिसके पिछले कर्मों में नाम लिखा होता है उसे ही नाम मिलता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने भी कहा हैः

वेद कतेब न भेद लिखयो जो गुरु ने गुरु मोहे बतायो।

गुरु ने मुझे जो भेद दिया है वह भेद मुझे वेद-शास्त्र पढ़ने से भी नहीं मिला।

जीव पड़े चौरासी भरमें, खान पान मद मान लई।।

नाम के बिना नम्रता, शान्ति और आजजी नहीं आती। हम विषय-विकारों और खान-पान में लगे हुए हैं। किसी को जीभ का चस्का लगा है किसी को काम इन्द्री का चस्का है और किसी को कानों का विषय है। हम इन्हीं विषयों में अपनी जिंदगी बर्बाद कर जाते हैं। चौरासी में से आते हैं और फिर चौरासी में ही चले जाते हैं

मान मनी का रोग पसरिया, बड़े बने जिन मार सही।।

हर किसी को बड़े बनने का रोग लगा हुआ है। यह रोग पशु-पक्षियों को भी लगा हुआ है वे भी कहते हैं कि हम ही हों और कोई न हो। इंसान का रोग तो हम देखते ही हैं। आप गुरु नानकदेव जी का शब्द परभाती राग पढ़कर देखें! सारी दुनिया ही रोगी है, सात समुद्र भी रोगी हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर भी रोगी हैं। सारे ही जन्म-मरण में लगे हुए हैं।

छोटा रहे चित्त से अंतर, शब्द माहिं तब सुरत गई ।।

परमात्मा ने जिन्हें सब कुछ दिया हो फिर भी वे अंदर से छोटे बनकर रहें। आप सन्तों की मिसाल लें! राजा-महाराजा सन्तों के दर पर आते हैं लेकिन सन्त कुल मालिक होते हुए भी अपने अंदर नम्रता-आजजी रखते हैं।

हम कई बार महाराज सावन सिंह जी के मुँह से ऐसे प्यार भरे लफ्ज़ सुनते थे। आप कहते, ''मेरा दिल करता है कि मैं सारी संगत के जोड़े साफ करूं।'' प्यारेयो! हमें दो आदमी माथा टेकने लग जाएं तो हम जमीन पर पैर नहीं रखते। हम सोचते हैं कि हम कितने गुणों के मालिक हैं। आप कुल मालिक परमात्मा होकर जीवों की संभाल करने वाले होकर भी यह कहते मेरा दिल करता है कि मैं साध-संगत के जोड़े साफ करुं। प्रेमी यह सुनकर रो पड़ते थे कि महाराज जी आपके मुँह से ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए। मालिक के प्यारों में ही ऐसी नम्रता होती है। राजस्थान की कहावत हैः

थोथा चना बाजे घना।

हममें कोई गुण नहीं होता, अगर दो-चार आदमियों ने हमें नमस्कार की तो हम अपने आपको ही भूल जाते हैं।

शब्द बिना सारा जग अन्धा, बिन सतगुरु सब भर्म मई ।।

सन्तों की बानी किसी एक समाज के लिए नहीं होती। जग में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्ण और कुल आलम आ जाते हैं। जिसे शब्द नहीं मिला वह अन्धा है। गुरु अंगददेव जी कहते हैः

माया धारी अत अन्ना बोला, शब्द न सुनी बहो रोल घचोला।।

अन्धा इसलिए है कि परमात्मा ने इसके अंदर बेशुमार प्रकाश रखा हुआ है लेकिन यह उस प्रकाश को नहीं देखता बाहर दीपक जलाता है। सच्ची आरती अंदर हो रही है, चाँद और सूरज उसके दीपक हैं। आरती का मतलब परमात्मा से जुड़ना है। हम बाहर ज्योत पर माथा टेकते हैं लेकिन हमारे अंदर जो सच्ची ज्योत है उसे प्राप्त नहीं करते। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

राम नाम है ज्योत सवाई, तत गुरुमत काढ़ लीजे।।

वह राम नाम की ज्योत चोरों-ठगों, हिन्दु-मुसलमानों और साधु-महात्माओं के अंदर भी है। फर्क इतना है कि महात्मा ने उस ज्योत को प्रकट कर लिया है और बाकी लोगों ने अभी उस ज्योत को प्रकट नहीं किया। उनको पता ही नहीं कि हमारे अंदर भी ज्योत है इसलिए हम अन्धे और बहरे हैं। परमात्मा रोज हमारे अंदर आवाज दे रहा हैः

सुत्ती पई नभाग सब सुणें ना बांगा कोए, जो जागे सोई सुणें साईं सद्दी सोए।।

ऊपर से रोज बांग आती है। जो जागते हैं वे उस बांग को सुनते हैं और उस बांग के साथ जुड़ जाते हैं। हमारे ऊपर माया का नशा चढ़ा हुआ है हम न ज्योत देखते हैं और न ही शब्द को सुनते हैं। प्यारेयो! माया का रंग उतरते देर नहीं लगती।

शब्द भेद और शब्द कमाई, जिन जिन कीन्ही सार लई।।

सन्त संसार में आकर अन्धविश्वास नहीं देते। जिन्होनें शब्द प्राप्त करके शब्द-नाम की कमाई की उन्होनें सच्चाई को आँखो से देख लिया और वे रोज ही उस सच्चाई को देखते हैं।

शब्द रता सतगुरु पहिचानो। हम यह पूरा पता दई।।

कई लोगों ने महाराज सावन सिंह जी से सवाल किए कि सन्तों को भी कोई निशानी रखनी चाहिए। महाराज जी ने कहा, ''क्या सन्त बोर्ड लगाएं कि हम सन्त हैं। जो शब्द-नाम की कमाई करते हैं वे खुद ही देख लेते हैं।''

आप यह न देखें कि यह महात्मा हिन्दु, मुसलमान या ईसाई है, यह हिन्दुस्तान या अमेरिका का रहने वाला है। हमनें तो महात्मा से ज्ञान प्राप्त करना है, रास्ता प्राप्त करना है। हमने उसके साथ खाना नहीं खाना न ही कोई रिश्ता-नाता करना है। स्कूलों और कॉलेजों में हमारे टीचर हिन्दु, मुसलमान और ईसाई भी होते हैं क्या हमने कभी ऐतराज किया कि हमने इससे नहीं पढ़ना।

मैं अपने उस्ताद लाले खाँ का नाम बड़े फक्र से लिया करता हूँ। मैं उससे पढ़ता था, सिग्नल सीखता था, वह बहुत अच्छा था। हमने तो इल्म लेना है। आप देख लें! राजा वीर सिंह, बघेल सिंह राजपूत क्षत्रिय राजा थे उन्होंने कबीर साहब को अपना गुरु धारण किया। मीरा बाई राजपुताने की रानी थी उसने रविदास को गुरु धारण किया। क्षत्रिय राजा पीपा ने भी रविदास को गुरु धारण किया। कबीर साहब कहते हैं:

जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

हमने म्यान से क्या लेना है? यह शरीर एक म्यान है। प्रभु परमात्मा शरीर में इस पोल पर काम कर रहा है। आप जाति-पाति पर न जाएं। वही पूर्ण महात्मा है जो खुद शब्द-नाम की कमाई करता है और अपने सेवकों से भी शब्द-नाम की कमाई करवाता है। ऐसा नहीं कि उसने कान में फूँक मार दी कि इससे ही तेरा काम चल जाएगा।

सिक्खां कन्न चढ़ाईयां, गुरु ब्राह्मण थीया।।

अब ब्राह्मण तेरा गुरु बन गया है। पूरा गुरु वही है जो शब्द स्वरूपी, शब्द अभ्यासी है और अपने सेवकों से भी शब्द-नाम की कमाई करवाता है।

खोलो आंख निकट ही देखो, अब क्या खोलूँ खोल कही।।

शब्द-स्वरूपी महात्मा हमसे यह नहीं कहते कि आप लम्बी-चौड़ी यात्राएं करें या फलानी नदी में जाकर स्नान करें। वे तो कहते हैं आप नजदीक से नजदीक अपने शरीर के अंदर ही देखें।

सब कुछ घर में कछु बाहर नाही, बाहर टोले सो भ्रम भुलाई।

आप जो कुछ बाहर ढूंढते हैं वह सब कुछ आपके अंदर है। न आज तक बाहर से किसी को कुछ मिला है और न मिल ही सकता है। मैं आपको और क्या खोलकर बताऊँ आपने खुद ही अपनी आँखों से देखना है।

हमारे सतगुरु परमात्मा महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है वही काम दूसरा भी कर सकता है।'' सन्त कहते हैं कि आओ! हम आपको देखने की युक्ति बताते हैं। आप थोड़ा सा अंदर आएं हम आपकी मदद करेंगे और हर मंजिल पर साथ भी चलेंगें।

आगे भाग तुम्हारा प्यारी। नहिं परखो तो जून रही।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आगे आपके भाग्य की बात है। गुरु नानकदेव जी भी कहते हैंः

जिन धुर कर्म पाया सो नाम हर के लागे।
कहे नानक तह सुख होया, तित घर अनहद बाजे।।

आप कहते हैं आगे तुम्हारा भाग्य है नहीं समझोगे तो योनियों में चले जाओगे। दुखों में से आए थे फिर दुखों में चले जाओगे।

कहना था सोई कह डाला। राधास्वामी खूब कही।।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में समझा दिया है कि कौन सी चीज हमारी **खोज** के काबिल है? वह है सतगुरु। मुक्ति नाम में है और गुरु के बिना नाम नहीं मिलता। सन्त-महात्मा हमारे फैले हुए ख्याल को बाहर से हटाकर अंदर शब्द के साथ जोड़ देते हैं। परमात्मा हम सबके अंदर है और हम परमात्मा को अंदर ही मिल सकते हैं।

अगर हम नहीं समझेंगे तो इंसानी जामे का मौका खो देंगे। इंसानी जामा परमात्मा ने हमें एक मौका दिया था हम योनियों में से आए थे फिर योनियों में चले जाएंगे। सन्त हमें इससे ज्यादा क्या खोलकर बताएं। प्यारेयो! आपको चौरासी के धक्के खाने के बाद इंसान का जामा मिला है। परमात्मा ने आपको यह तोहफा दिया है अगर इंसानी जामें को शराबों-कबाबों में गवां देंगे तो क्या करेंगे?

जब सच्चे पातशाह महाराज जी गंगानगर आए तो आपने मुझसे कहा कि यहाँ कोई ग्रेवाल है? मैंने कहा, ''हाँ जी।'' आपने कहा कि मेरा प्रीतम गुरु ग्रेवाल था मुझे इस जाति से बहुत प्यार

है। मैं उस ग्रेवाल को ले आया। वह रोजाना शराब पीता था। महाराज जी ने हँसकर कहा क्यों भई, सन्तों का अपना ही लहजा होता है और उसका भी समय आ चुका था। उसने कहा अगर मैं शराब न पीऊं तो मुझे खाना हजम नहीं होता। महाराज जी ने कहा अगर परमात्मा ने बैल या कोई ऐसी ही योनि दे दी जिसमें खाने को अन्न भी न मिले तो क्या करेगा? बस आपने ये दो बातें कहीं तो उसके दिमाग पर ऐसा असर हुआ कि उसने शराब छोड़ दी।

कुछ दिनों बाद जब महाराज जी फिर गंगानगर आए तो उसने नामदान प्राप्त किया। वह आजकल दुनिया में नहीं है। मेरे कहने का भाव यह है अब तो हम शराबों-कबाबों में मस्त रहते हैं आगे पशु-पक्षियों की योनि में जाएंगे तो वहाँ कौन शराब देगा? हजरत बाहु ने कहा थाः

कब्रा दे विच अन्न न पानी, ओत्थे खर्च लोड़िंदा घर दा हू।।

वहाँ कौन सी माता बैठी है, कौन सा ठेकेदार होगा जो शराब के प्याले भरकर देगा? हमें इंसान का जामा मिला है इसे खाने-पीने में बर्बाद करके हम अपने साथ अन्याय कर रहे हैं।

महाराज जी कहा करते थे कि जो लोग भजन-सिमरन नहीं करते अपना चाल-चलन सही नहीं रखते वे अपनी गर्दन छुरी से काट रहे हैं। भजन करना किसी के ऊपर अहसान करना नहीं है।

अपने जीव की दया पा लो, चौरासी का फेर बचा लो।।

भजन करना अपने ऊपर दया करना है। हमें भी चाहिए कि स्वामी जी महाराज ने हमें जो कुछ इस शब्द में बताया है उस पर अमल करें, अपने जीवन को पवित्र बनाएं। परमात्मा ने हमें जो मौका दिया है इससे फायदा उठाएं। 31.03.1996

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

मुंबई DVD - 612 (2) 11 जनवरी 1992

एक प्रेमीः- *महाराज जी! आप उस व्यक्ति को क्या सलाह देना चाहेंगे जिसका साथी सन्तमत को नहीं मानता और उनके बच्चों को क्या सलाह देना चाहेंगे जिन्हें सन्तमत के दो अलग-अलग दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं। उन्हें क्या करना चाहिए जिससे उनके बच्चे परेशान न हों उन्हें किस चीज में यकीन करना चाहिए और किस तरह का खाना-पीना खाना चाहिए?*

बाबा जीः- सबसे पहले तो उस प्रभु सावन-कृपाल को नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। सवाल बहुत अच्छा है। आमतौर पर गृहस्थ में प्रेमियों को अक्सर ऐसी दिक्कतें पेश आती रहती हैं कि किसी घर का मियाँ सतसंगी है किसी घर की बीवी सतसंगी है या किसी घर के बच्चे सतसंगी हैं, ऐसे में खटपटी बनी रहती है।

सतसंगियों को मेरी बचपन की हिस्ट्री पढ़नी चाहिए। मैं अपने घर में आँखें बंद करके बैठता था जिससे मेरे पिता खुश नहीं थे लेकिन मेरी माता मदद करती थी। मेरी माता भक्तिभाव वाली औरत थी, मेरे पिता भी अच्छे थे लेकिन मैं जिस तरीके की भक्ति करता था वह उन्हें पसंद नहीं था।

अगर सतसंगी मजबूत है तो सतगुरु अपनी दया जरुर बरसाता है। मैं उस कार्यक्रम में लगा रहा, मेरी माता मेरी मदद करती रही। एक दिन ऐसा आया कि मेरी भक्ति का फायदा मेरे पिता को मिला। आप वह हिस्ट्री पढ़ेंगे कि किस तरह तीन दिन पहले महाराज

सावन सिंह जी और महाराज कृपाल उन्हें दर्शन देते रहे। जो कोई मेरे पिता के पास आता तो आप उससे यह कहते, ''मुझे सफेद कपड़ों वाले दो आदमी दिखाई दे रहे हैं।'' मेरे पिता नामलेवा भी नहीं थे। मेरे पिता पंजाब में रहते थे और मैं गंगानगर राजस्थान में रहता था। तीन दिन पहले मुझे तार दिया गया मैं उनके पास गया। उस दिन मेरे पिता खुश हुए और मेरी पीठ पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, ''आज मुझे तेरी भक्ति का पता चला है।''

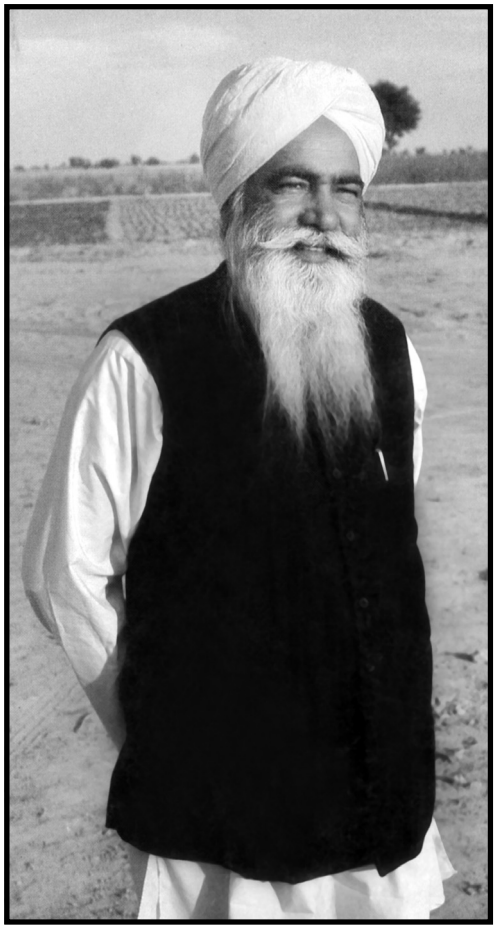

अब मैं आपके सवाल की तरफ आता हूँ। चाहे किसी घर में मियाँ सतसंगी है चाहे बीवी सतसंगी है चाहे बच्चे सतसंगी है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर सतसंगी घर में एक नमूने का जीवन व्यतीत करे अपने मकसद में पक्के हो तो घर में किसी तरह का झगड़ा नहीं होता कि मेरा रास्ता ठीक है तेरा रास्ता ठीक नहीं इससे बहस होने लग जाती है। अगर सतसंगी ठीक रास्ते पर चलता है तो उसमें से नाम की खुशबू आएगी। बेशक आप जुबान से न बोलें एक दिन घर के जितने भी मेंबर हैं वे सब नाम की खुशबू को जरूर समझेंगे।

आपके ग्रुप में एक बुजुर्ग सतसंगी औरत बैठी है उसका पति नामलेवा नहीं था। वे हमें सन्तबानी आश्रम अमेरिका में मिलने के लिए आए। उसका पति वकील था, वह कहने लगा कि मैं किसी और मत को नहीं मानता, मैं किसी को माफ नहीं करता खासकर आपको तो मैं माफ करता ही नहीं। पप्पू यह बात झिझककर बताने लगा और परेशान हो गया कि यह क्या घटना घट रही हैं? मैंने कहा, ''पप्पू बेटा! बता तो सही क्या बात है? यह यही कह रहा है कि मैं तो किसी को माफ करता ही नहीं।'' तब मैंने पप्पू से कहा कि इसमें परेशान होने की क्या जरुरत हैं? जिसके पास माफी होगी वही माफी दे सकता है, माफी तो सिर्फ सन्त ही दे सकते हैं। जब दुनियादारों के पास माफी है ही नहीं तो वे कहाँ से देंगे। मैंने उसे बड़े प्यार से कहा कि मैं तुझसे प्यार करता हूँ और ये दया मेरे ऊपर मेरे गुरु कृपाल ने की है। आज वह वकील अपनी पत्नी को हमेशा ही सतसंग में भेजता है और अपना प्यार भी भेजता है। अब उस प्रेमी को पता लगा कि मैं किसी गुरु के सिख से मिला था।

जब हैदराबाद का सतसंग था उस समय वह बहुत बीमार था, उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी फिर भी उसने अपनी पत्नी को सतसंग में भेजा। जब मुझे पता लगा कि उसकी यह हालत है तो मैंने उसकी पत्नी को बड़े प्यार से वापिस भेजा। उसके लिए प्यार भी भेजा और कहा कि तू जाकर अपने पति की देखभाल कर।

नामलेवा को सन्तमत की जानकारी होती है वह समझदार होता है। घर गृहस्थी को प्यार से चलाना चाहिए, घर को स्वर्ग बनाना चाहिए और सब्र से काम लेना चाहिए। जब सतसंगी घर में डायरी रखेगा, रोज-रोज अभ्यास करेगा, अपनी जिंदगी को बेहतर बनाएगा तो घर के लोग भी उसकी नकल करेंगे।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

जाट की घंटी

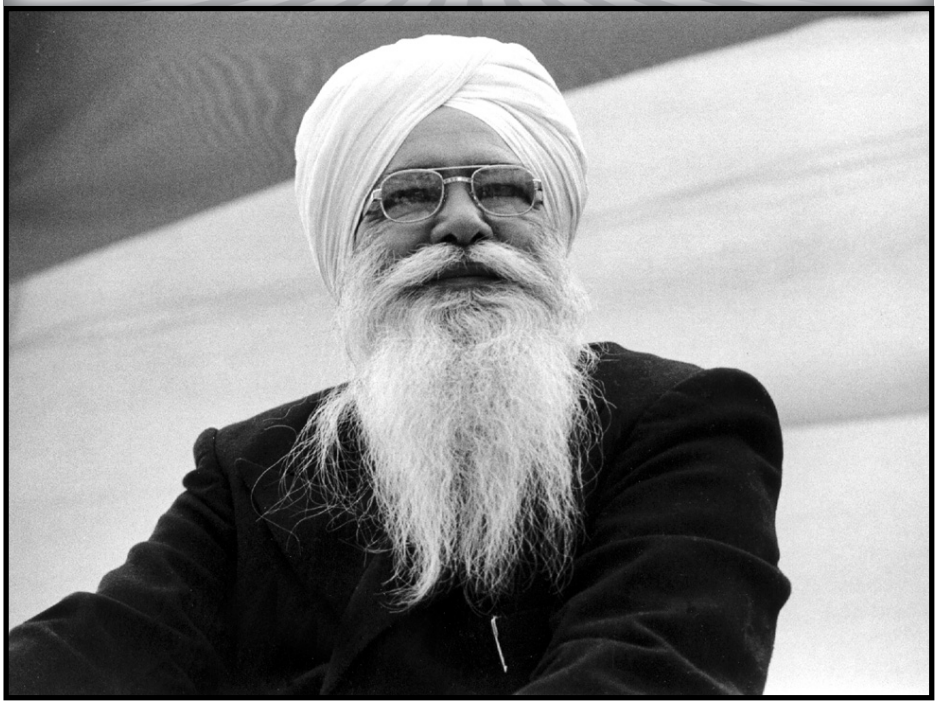

अगर इंसान के बस में हो तो इंसान यही चाहेगा कि सारी दुनिया का धन-पदार्थ उसे ही मिल जाए लेकिन जो परमात्मा को मंजूर होता है वही होता है।

एक जाट ने बहुत भक्ति की। परमात्मा उस पर प्रसन्न हुआ। परमात्मा ने जाट से कहा, ''माँग क्या माँगता है?'' जाट ने कहा, ''मेरे घर में अन्न-धन की कमी है।'' परमात्मा ने उसे एक घंटी देकर कहा, ''जब तुझे किसी चीज की जरूरत हो तो यह घंटी बजा दिया कर तुझे जो चाहिए वह मिल जाएगा मगर शर्त यह है कि तेरे पड़ोसी के घर तुझसे दोगुना जाएगा।''

जाट घंटी का वरदान पाकर खुश हुआ लेकिन शर्त सुनकर दुखी हुआ। जाट ने अपनी पत्नी से कहा कि इस घंटी में यह गुण है। उसकी पत्नी उसे हमेशा कहती कि तुम इस घंटी को बजा दो अगर पड़ोसी के घर दोगुना जाता है तो जाने दो। जाट ने कहा, ''भक्ति मैंने की और फायदा पड़ोसियों को मिले!''

परमात्मा ने सोचा, देखें इसकी हिम्मत कहाँ तक है? उस पर हर तरह के कष्ट आए लेकिन उसने घंटी नहीं बजाई। आखिर उसने अपना गांव छोड़ दिया और बाहर जाकर अपना समय बिताने लगा। जाट के चले जाने के बाद उसकी पत्नी ने घंटी बजाई। परमात्मा प्रकट हुए और पूछा, ''क्या जरूरत है?'' उसने जो माँगा वह मिल गया। उसके घर में बहुत अन्न-धन आ गया। पड़ोसी भी मौज करने लगे।

कुछ वर्षों बाद जब वह जाट लौटा तो बाहर गाँव के लोगों ने उसे बताया कि परमात्मा ने तेरे घर में तो बहुत कुछ दिया है। जाट ने कहा, ''कहाँ से आना था मेरी ही घंटी बजाते होंगे।'' घर आकर पत्नी से कहने लगा, ''तू ना मानी।''

जाट ने स्नान करके घंटी बजाई। परमात्मा हाजिर हुए और उससे पूछा, ''भाई! क्या चाहिए?'' जाट ने कहा, ''मेरे घर में एक कुआं लग जाए।'' पड़ोसी के घर में दो कुएं लग गए। जाट ने फिर घंटी बजाई, परमात्मा ने हाजिर होकर जाट से पूछा, ''अब क्या चाहिए?'' जाट ने कहा, ''मेरी एक आँख फूट जाए।'' पड़ोसी की दोनों आँखें फूट गई।

भाव यह है अगर इंसान के बस में हो तो वह किसी को कुछ भी न खाने दे। सब कुछ परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है। परमात्मा सबको एक समान देखता है और सब पर दया करता है।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंह नगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

01 से 03 नवम्बर 2019

29, 30 नवम्बर व 01 दिसम्बर 2019

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम

08 से 12 जनवरी 2020